बृहत् साबर तन्त्र

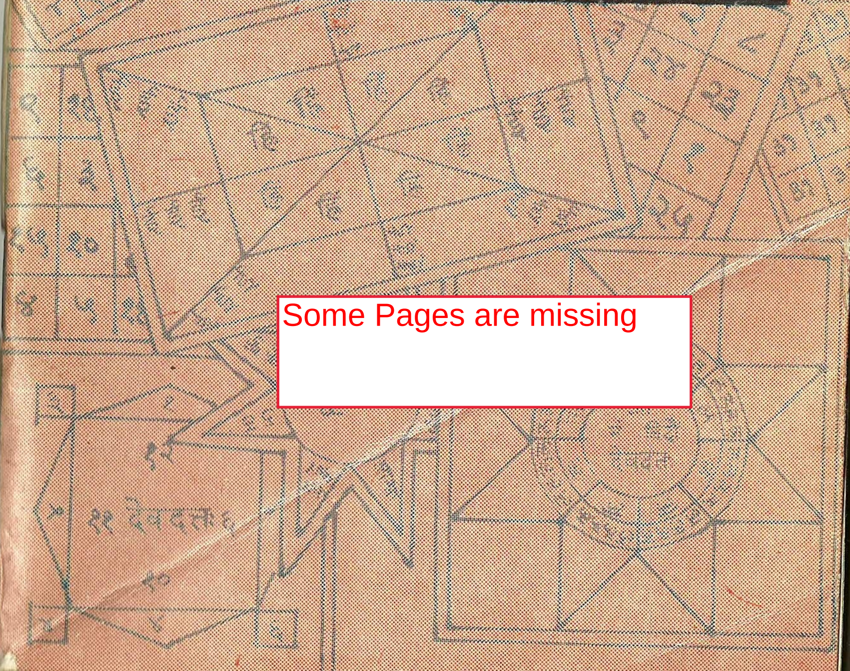

Some Pages are missing

विषयः		पृष्ठांकः	विषयः		पृष्ठांकः
शत्रुज्वर यं०	...	६७	चामुण्डामंत्रोद्धार	...	७६
शत्रुकी छाती फटनेका यं०		,,	चामुंडा मंत्र	...	,,
ज्वर मं०	...	६८	चामुंडाध्यान	...	,,
गर्भस्तम्भन मं०	...	,,	विधि	...	७७
भूतनाशक मं०	...	६९	कामेश्वरमन्त्रोद्धार	...	,,
डाकिनी नजर दूर करनेका मं०		,,	कामेश्वर मं०	...	७८
उच्चाटन मं०	...	७०	ध्यान	...	,,
नुग्वप्रसव यं०	...	,,	विधि	...	७९
राक्षसनाशन मं०	...	७१	स्थाननिर्णय	...	७९
मसान मं०	...	,,	वशीकरणप्रयोग	...	८०
मन्त्रप्रयोग	...	,,	वशीकरण यं०	...	८१
शिरका दर्द झाडनेका मं०	...	७२	प्रेतविमोचनविधि	...	,,
मनोरथसिद्धि मं०	...	७३	प्रेतविमोचनपुदुनबत	...	८३
शत्रुमोहनीय यं०	...	,,	अनेक यं०	...	,,
सब प्रकारके रोग दूर होनेका यं०		७४	दाढके दर्दका मं०	...	८५
काम मं०	...	७४	यंत्र	...	८६

इति अनुक्रमणिका समाप्त ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ

शिवोक्तं

बृहत्साबरतन्त्रम्

[विधानसहितं]

पार्वत्युवाच ।

भगवन् मम प्राणेश सर्वलोकशिवंकर ।
बृहत्साबरतन्त्राणि वक्तुमर्हस्यशेषतः ॥ १ ॥

पार्वतीजी बोलीं, हे हमारे प्यारे प्राणनाथ ! हे समस्त संसारके मंगलकर्ता ! हे भगवन् ! हे महादेव ! आप सम्पूर्ण बृहत्साबरमंत्र यंत्र और तन्त्रोंको मुझसे वर्णन करिये ॥ १ ॥

महादेव उवाच ।

वक्षाम्यहं साबराणि मन्त्रतन्त्राणि पार्वति ।
सर्वकामप्रसाधीनि शृणुष्वावहिता प्रिये ॥ २ ॥

महादेवजी बोले, हे प्यारी पार्वति ! जितने साबर-मन्त्र और तन्त्र हैं, जिनसे कि समस्त कामनासिद्ध हो जाती है, उनको हम तुमसे कहते हैं तुम साव-धान चित्तसे श्रवण करो ॥ २ ॥

तत्रादौ वशीकरणमंत्रः ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय त्रिलोचनाय त्रिपुर-बाहनाय अमुकं[1] मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

इस मंत्रको सिद्ध योगमें १०८ वार जपे और सुपारी पढके दे तौ वश्य होता हैं ।

स्त्रीवशीकरण ।

ॐ नमो कटविकटघोररूपिणी अमुकं मे वशमानय स्वाहा ।

प्रथम इस मंत्रको ग्रहणमें १०००० वार जपे फिर रवीवारको इससे अभिमन्त्रित करके भोजन करे

---

१ पाठकोंको ध्यान रखना चाहिये कि जाहां „ अमुक " लिखा हो वहां उस व्यक्तिका नाम लेना चाहिये जिसके ऊपर प्रयोग करना है ॥

और भोजन करते समय जिसे वशमें करना चाहे उसका नाम लेता जावे तो वह शीघ्र वशीभूत होती है ।

अन्यच्च ।

ॐ चामुण्डे जय २ वश्यंकरि जय २ सर्वसत्वान्नमः स्वाहा ।

इस मंत्रको १०००० वार जपे फिर रविवार या भौमवारको इस मन्त्रसे पुष्प अभिमन्त्रित कर जिसे दिया जायगा वह अवश्य वश होगा ।

अन्यच्च ।

ॐ नमो भगवति मातंगेश्वरि सर्वमुखरंजनि सर्वेषां महामाये मातंगे कुमारिके नन्द २ जिह्वे सर्वलोक वश्यकरि स्वाहा ।

इसका १०००० जप करनेसे यह मंत्र सिद्ध होता है ।

श्वेतापराजितामूलं चन्द्रग्रस्ते समुद्धृतम् ।
अंजिताक्षो नरस्तेन वशीकुर्याज्जगत्त्रयम् ॥ १ ॥
ताम्बूलं रोचनायुक्तं तिलकेन जगद्वशम् ।

ताम्बूलेन प्रदातव्यं भोजने पानमेव च ॥ २ ॥
शिलारोचनताम्बूलं वारुणी तिलके कृते ।
संभाषणेन सर्वेषां वशीकरणं जायते ॥ ३ ॥
शिरो निवेष्टितं कृत्वा तेनैव तिलकं कृतम् ।
अदृष्टं तं न पश्यंति नार्यो वा पुरुषाश्च वा ॥ ४ ॥
ग्राह्यं शुक्लत्रयोदश्यां श्वेतगुंजां समूलकम् ।
तांबूलं च प्रदातव्यं सर्वलोकवशंकरम् ॥ ५ ॥

चंद्रग्रहणके समय श्वेत विष्णुकान्ताकी जड लेकर उसका अंजन नेत्रोंमें लगानेसे निःसन्देह त्रिभुवन वशीभूत होता है ॥ १ ॥ ताम्बूलमें गोरोचन मिलाकर तिलक करनेसे अथवा ताम्बूलके साथ या भोजनमें मिलाकर भक्षण करा देनेसे जगत् वशी भूत होता है ॥ २ ॥ मनसिल, गोरोचन और ताम्बूल इन तीनोंको मिलाकर तिलक लगावे तो तिलक लगानेवाला जिससे संभाषण करे वह वशीभूत होता है ॥ ३ ॥ शिर निवेष्टित करके तिलक करे तो उससे अदृष्ट हो जावे उसे कोई स्त्री पुरुष नहीं देख सके ॥ ४ ॥ शुक्ल-

पक्षकी त्रयोदशीको सफेद घूंघचीको जडसहित लेके पानके साथ देनेसे सब लोक वश हो जाते हैं ॥ ६ ॥

अन्यदपि ।

या आमीन या फामीन हमारे दिलसे फलानेका दिल मिला दे ।

जिसपर मंत्र चलाना हो उसके सुमुख अग्निके निकट बैठके उसे गूगल लोबान धूप दिखावे और जब उसकी दृष्टि उस धूपके ऊपर पडे तब उसे मंत्र पढ अग्निमें गिरा देवे । इस प्रकार २१ वार होम करे तथा ७, १४ या २१ दिन इसी तरह होम करे तो वह तत्काल वश होगा । यह मन्त्र स्त्रियोंके ऊपर अपना प्रभाव शीघ्रही उत्पन्न कर देता है ।

अन्यच्च

पिंगलायै नमः ।

इस मंत्रका २०००० जप करे ।

इस मंत्रसे २१ वार बीडेको अभिमंत्रित करके जिसे दिया जाय वह वश होगा।

अन्यच्च।

ॐ क्लीं ह्रीं नमः।

इस मंत्रका तीनों समय १००० जप करे तो पातालवासी वशमें होते हैं। १०००० हजार जप करे तो देवता वशमें होते हैं। १०००० जप करे तो त्रिलोकी वशमें हो जाती है।

अन्यच्च।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कालिके सर्वान् मम वश्यं कुरु कुरु सर्वान् कामान् मे साधय २। अनेन मन्त्रेण यस्य नाम्ना एकविंशति वारं प्रातः मुखं प्रक्षालयेत्। अथवा जलमभिमंत्र्य ददाति स वश्यो भवति।

प्रेत बरावेका मंत्र ।

बांधो भूत जहां तु उपजो छाड़ो गिरे पर्वत चढाइ सर्गं दुहेलीपृथिवी तुजभिझिलिमिलाहि हुंकारे हनुंवंत पचारइ भीमा जारि जारि जारि भस्म करे जों चांपेसींउ ।

आतमफूंकन मंत्र ।

ॐ मुरतोंका गंडा अष्ट वेताल आठों वायु तीसोरहसे छेद भेदकी ज्ञानमो रंगे नकरुद्यामो रमा नारायणी सप्त पाताल जानि मोर काज मोहिसाडारे तइथिला विकिटार आस आस विकिटार तो सोरषीमो गोरषी कारसी आकार बीज गोरपी वज्र करथिवौ ।

बाबाआदममंत्रः ।

गुरु सत्यं विस्मिल्लाहका पूज्योमा आवनकार आदि गुरु सृष्टिकरतार वेद वहर तारांहि एकी आइ युगचारि तीन लोक वेद चारि पांचों पांडव छव मारग सात समुद्र आठ वसु नव ग्रह दश रावण

ग्यारह रुद्र बारहराशि तेरह मोल चौदह शोक पंद्रह तिथि चारि खानि चारि वानि पांच भूत चौरासी आत्मा लापति अयोनि अष्टकुली नाम तैतीस कोटि देवता आकाश पाताल मृत्यु लोक रात दिन पहर घरी दण्ड पल विपल महारथ साषिघर भेहौ अबजो कछु फलानेके पीरा देव दानव भूत प्रेतराखीसुजानु- विनातु किता कराषादितावा क्षागाठिसुठिरषणी मु- खणी विलनी फोठौरी ग द्धहीनी नाईकषोलाइअधौगी करंण मूल वायुसूलुणसुहूननहरुवागडहरुवा जगरहू करक्त पीतमूत्र कुक्षडाढारह प्रमेह गोला फलीहा नहरू- आ अहोगा सोगा अर्वशीशी कुटीलुती तुवारी मिरगी कमलवांड हंडी आनुवावुहयेलगंडकनायुचो टफेट- दिताक्तिालापालगायाषरपितीलंघा उलंघावाट घाट बाहर निसार पसार सांझ सकार कौनहु प्रकार होइ हाडउदवार चामनाडी अर्द्धअंगजहारूसीदोहाइ सलेमानपैगम्बरकी तुरन्त विलाही षीनजाही नातरु सवा लाख पैगंबरकी वज्रथाप नवनाथ चौराशी

सिद्धिके सरापशेपसरपूदी अहि आपीर मनेरीकी-शक्ति बाबाआदमकी भक्ति जरिभस्म होइ जाय जाहिनिहिनिषिद्धजाहि जाइ पिंड कुशल दोष फिटु फिटु स्वाहा ।

मंत्रभूतडायिनियांगलसर्वकेझारेकामंत्र ।

जैसे कैलोमाकार्य सरूपे करिकरिवो न करो वली तते रामलक्ष्मण सीतेया करि कोटि २ आज्ञा ।

इस मंत्रसे भूत डाइनियां गल नाल नाईको झाडा देनेसे बाधा दूर होती है ॥

देवीमंत्रः ।

ॐ रुनुं इझुनुं इमृत मारातं देवी ओरंपर तारा वीरमान्यो बीर तोन्यो हांकडांक महिमथन करण-जोग भोग जोग घर छतीस नक्षत्र घर सर्प पति वासुकी घर सप्तब्रह्मांडे पति ब्रंह्मोके छायाधौ देवीधौ देवताधौ डाइनिधौ गुरुराणांधौ भूतधौ प्रेतधौ घरघर मांचंडी बीजकरुवालपंडी धौर्यवागुटिनां य दाददली

इमानको चलंते केके जाते औ रेवीर भैरवी कामरूप कामचंडी घर घर वाकी महा काव्य करे मडह्र मारौ कुकी धर वारण धरौवलीते ते कामरू काम-चंडी इटमाया प्रसरणि कोटि कोटि आज्ञादेवी राम-चंडी बीजे चलिषंडी चौदिगे ऐरलदेवी वसिलाकि-मांडि चंडिचंद्र चमकिले सूर्यटरिल ऐरलदेवी हरा-हरांपरि सुखिला कीटरे जीवो परांद्रिवाहंते खप्पर दाहिने हाथे छुरि ऐरलादेवी अवरतारि डाइनि बांधो चुरइलि बांधुगुनीबांधु मोराबांधु मसानी बांधु गुनिया नासुनी आवे गरणि आंवुलाव्रे रांडे माला डांडे जीवताडांडै हसै खेलै भारिवन झारो वलिते ते ते कामरू कामचंडि कोटिश आज्ञा।

वाघ बरावेका मंत्रः।

बैठी बैठा कहां चल्यौ पूर्वदेश चल्यौ आंखि बांध्यौ तीनों कान बांधौ तीनों मुँह बांधौ मुँहकेत जिह्वा बांधौ अधौ डांड बांधौ चारिउ गोड बांधौ

तेरी पोछि बांधौ न बांधौ तौ मेरी आन गुरुकी आन वज्र डांड बांधौ दोहाई महादेव पार्वतीके।

यह तीन वार पढके चार कंकर चारों तरफ डारके बीचमें बैठे।

अन्यच्च।

ॐ सत्यमाता शंकरपिता शंकर किलइ चारिऊ दिशा जहां ३ म शंकर जाइ तहां २ मेरो किंकर जाइ जहां जहां मेरी दीठि तहां तहां मेरी मूठि जहां जहा मेरी नादको शब्द सुनि आवे हो नरसिंहवीर माताबाघेश्वरीको दूध हराम कर कहौ कवन २ किलोवानषुर्वा न पुंगलीआर शार्दूल केशरि तेंदुवा सोनहार अघिआगाघिआ अटिआर दूदिआर हरिआर काठि पठि पराधिता चलि घेरिये ते नह्नि आरे अवनि किलौ नार सिंहवार किलै कहु कवन २ किलौगाइका जायाः भद्र सिक जाया भेड़ीका जाया घोड़ीका जाया छेरीका जाया दुइयावचौ पावक

धनुर्बंधनमंत्र ।

ॐ [illegible] माह्रासारसो बांधौ तीनि धार न धरै चोट न परै घाव रक्षा करे श्रीगोरखराउ ।

सर्वधारबंधनमंत्र ।

जहिआ लोह तोर शिर जाका घाव मासकर जानि हिया आनंत सोचर करहु मैं बांधौ धारधार मूठि धनि दुनौ तारि ठढीहीमीहिन अडाफाटिहि चण्डी दीन्हिवरमोहिं धारजेठठै तोरिरइ ईश्वर महा-देवकी दुहाई मोरे पथ न आउ धारधार बांधौ लेहु उठे धार फुटै मुनै फुटै मोरि सिद्धि गुरूके पांव शरण।

धार बांधनेका दूसरा मंत्र ।

माता पिता गुरू बांधो धार बांधौ अस्त्री वश्ये कटै मुनै बांधा हनुमन्तनसुर नवलाख शूद्रनपाके पांउ रक्षा कर श्रीगोरखराउ एती देइन वाचानरसिंहके दुहाई हमारी सवति आ

अग्निस्तम्बनमंत्रः

अपार बांधौ विज्ञान बांधौं घोराघाट आठकोटि वैसंदर बांधौ हस्त हमारे भाइ आनाहि देखे झझके मोहिं देखे बुझाइ हनुमन्त बांधौ पानी होइ जाइ अग्नि भवतेके भवै जस मदमती हाथी हो वैसंदर बांधौ नारायण भाषी मोरि भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ।

बीग बरावेका मंत्र ।

विगुलीतियुताक पठै कात एहा एहैं नाथकै मान मारे पहरै बाढै भीम मरहु विगजों चापुह सीम ।

मिश्रित मंत्र ।

गोरख चले विदेश कहँ सातो देहे बांधि से पांचो चोरविग यथा गोरखनाथकी दुहाई जौं काहु सतावे।

राजावशीकरण ।

ॐ क्ष्रां क्ष्रूं क्षः । १२ । सौं हं हं सः ठः ठः ठः ठः स्वाहा ।

इस मंत्रसे भोजनको अभिमंत्रित करके भोजन करे तौ राजा वशीभूत होता है अथवा जिस मनुष्यका नाम लेकर भोजन करे वह निश्चय वश होता है। उक्त मन्त्रसे अभिमन्त्रित पुष्पोंकी माला शिरपर धारण करे तौ स्त्रियें वश होती हैं। उक्त मन्त्रसे अभिमन्त्रित कर जायफलका भक्षण करे तौ कामोद्दीपन होता है।

अन्यच्च।

ॐ नमो भगवते ईशानाय सोमभद्राय वशमानय स्वाहा।

देवदालीरसं ग्राह्यं शुष्कचूर्णं तु कारयेत्।
कन्यया च युवत्या वा गुटिका कारयेद्बुधः॥ १॥
राजानो वश्यतां यान्ति स्त्रियः पुंसश्च सर्वशः।
चौरभयं न तस्यापि न च शत्रुभयं क्वचित्।
व्याधयः प्रशमं यान्ति शुभं च परिजायते॥२॥

देवदालीका रस लेकर उसको शुष्ककर चूर्ण करे फिर कन्या या युवतीसे उसकी वटिका करावे इससे राजा, स्त्री तथा पुरुष सब वश्य होते हैं। चौरभय शत्रुभय तथा सब व्याधियां नष्ट होती हैं और शुभकी प्राप्ति होती है ॥ १ ॥ २ ॥

पुष्यार्के श्वेतगुंजाया मूलं पञ्चमलान्वितम् ।
ताम्बूलेन प्रदातव्य सर्ववश्यो भवेद्ध्रुवम् ॥३॥
तस्या मूलं समुद्धृत्य स्वीयशुक्रेण भावयेत् ।
यस्मै प्रदीयते भोक्तु स वश्यो भवति ध्रुवम् ॥४॥

पुष्यार्कमें श्वेत गुंजा (चोंटली) का मूल लाकर उसको पंच मलोंसे युक्त कर तांबूलके साथ जिसको दिया जायगा वह निश्चयसे वश होगा अथवा अपने वीर्यसे भावित कर जिसको खानेके लिये दिया जायगा वह निश्चयसे वश्य होगा ॥ ३ ॥ ४ ॥

द्वितीय मंत्र ।

ॐ चिटि चिटि चामुण्डा काली काली महाकाली अमुकं मे वशमानय स्वाहा ।

सप्तभिर्वशयेत्सर्वं दिवसैर्विधिनामुना ।
विलिख्य तालपत्रे तं साध्यनाम्ना विदर्भितम् १
निक्षिप्य क्षीरे पुष्पाणि तत्सर्वं वशयेद्ध्रुवम् ।
तालपत्रे लिखित्वेवं भद्रकाली गृहे खनेत् ।
वश्याय सर्वजन्तूनां प्रयोगोऽयमुदाहृतः ॥ २ ॥

इस मंत्रको ताडपत्रपर लिखके साध्यका नामभी लिखे फिर कनेरका दूध और जल बराबर लेके उसमें ताडपत्रको डाल दे और रात्रीके समय उस पत्रको अग्निमें चढा देवे और आप बैठकर १००० वार उक्त मंत्रका जप करे इस प्रकार ७ दिनपर्यंत करे तौ जिसके ऊपर प्रयोग किया जाय वह वश होगा ।

मिश्रित मंत्र ।

बाघ बिजुली सर्प चोर चारिउ बांधौ एक ठौर धरती माता आकाश पिता रक्ष २ श्रीपरमेश्वरी

कालिकाकी वाचा दुहाई महादेवकी तालत्रय शब्दा-
वधि रक्षा प्रसंगात् ।

पाषाण बरावेका मंत्र ।

समुद्र समुद्रमें दीप दीपमें कूप कूपमें कुइ जहांते चले हरिहर परे चारों तरफ बरावत चला हनुमंत बरावत चला भीम ईश्वर गौरी चला भोला ईश्वर भांजि मठमें जाइ गौरा बैठी द्वारे न्हाइ ठपकै नउद परे न बोला राजा इन्द्रकी दुहाई मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच ।

तालत्रयेण सर्प बरावेका मंत्र ।

सर्पायसर्प भद्रं ते दूरं गच्छ महाविष । जन्मे-जयस्य यज्ञांते आस्तिक्यवचनं स्मर ॥ आस्ति-क्यवचनं स्मृत्वा यः सर्पो न निवर्त्तते । सप्तधा भिद्यते मूर्ध्नि वृक्षात्पक्कफलं यथा ॥ रात्रौ पठित्वा तालत्रयं दत्त्वा शयनसमये तदा सर्पभयं न कुर्यात् ।

१ इस सिद्धमंत्रकी महिमाको सर्व साधारण जानते हैं ।

रात्रिमें शयनके समय इन श्लोकोंको पढके तीन तालियां बजाके सो जावे तौ सर्पसे भय नहीं होवेगा।

सूकर मूस बरावेका मंत्र।

हनिवंत धावति उंदरहि ल्याये बांधि अब खेत खाय सूअर घरमां रहे मूस खेत घर छांडि बाहर भूमि जाइ दोहाइ हनूमानके जो अब खेतमहँ सुवर घरमहँ मूस जाइ।

नहायके इस मंत्रको ६ वार पढके पांच गांठकी हलदी और अक्षत जहां सूअर और मूसा आवे वहां बराय दे।

अन्यच्च।

चितफर्विमनचूहा गांधी एपारी रावन घर बांधी।

अन्यच्च।

हरदीकर गांठी अक्षत पढिके बराइव दुष्टके खेत घरमहँ। पीतपीतांबर मूशागांधी। ले जाइहु हनुमंत

तु बांधी ॥ ए हनुवंत लंकाके राउ ॥ एहि कोणे पैसेहु एहि कोणे जाउ ॥

केवल मूस बरावेका मंत्र ।

मूशा चूहा कुंभ कराइ। जबही पठवी तबही जाई ॥ मूशके ऊपर मूशके फेट । तू जाइ काटहु आनके खेत ॥ गौरापार्वतीके दुहाई महादेवकी आज्ञा ॥

शस्त्रास्त्र बरावेका मंत्र ।

बांधी तूपक अवनि वार न धरै चोट न परै घाउ रक्षा करै श्रीगोरखराउ ।

सातवार पढै सर्वांग स्पृशेद्रेणुना ।

अग्निस्तम्भनमंत्रः ।

अज्ञानबांधो विज्ञानबांधो बांधौ घोराघाट आठ कोटि बैसन्दर बांधो अस्त हमारा भाइ । आनहि [illegible] [illegible]के मोहिं देखि बुझाइ हनुवंत बांधो पानी

होइ जाइ अग्निभवेत के भवे जसमत्ती हाथी होइ वैसंदर बांधौ नारायण साखि मोरी गुरुकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ।

अन्यच्च ।

अग्नि बांधौ बाहन बांधौ कुल्पाहा बांधौ २ बीचकी वायु चारिहु खुटै वैसदर बांधौ आतस मेरा भाव अवर देखे उमगे हमहिं देखे शीतल होइजाइ अग्नि गलिगण्डे लकडी बांधौ बहिनि बांधौ शाल हाथ जरे न जिह्वा जरे हनिवंत बीरकी आज्ञा फुरे देखि वायुवीर हनुमंत तेरी शक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मंत्रईश्वरोवाच ।

कराही थांभेका मंत्र ।

महिथांमो महिअरथांभोथांभोमाटी सार थांभनो आपनो बैसंदर तेलहि करोतुषार ।

दिष्यके कराहि पढि ७ बेर तौ जीते ।

अन्यच्च ।

बन बांधौ बनमें दिनि बांधौ बांधौ कंठाधार तहाँ थांभौ तेलतेलाई औथांभौ बैसंदर छार बनमें प्लुशीत-

लतातेलावे जयपार ब्रह्माविष्णु महेश तीनिडचल के-
दार देवी देवी कामाक्षाकी दुहाई पानी पंथ होइ जाइ॥

प्रसंगादग्निमुक्तारनमंत्रः।

अग्नि भवतेकेभवे जशमदमतीपर पिण्ड दुःख पावै दोहाई नरसिंह जग दुःख पावै।

तेलस्तंभनमंत्रः ।

तेल थांभौ तेलाई थांभौ अग्नि वैसंदर थांभौ पांच पुत्र कुंताके पांचे चले केदार अग्नि चलंते हमचले अगिआ परा तुषार ।

टौनाझारेकामंत्र ।

लोना सलोना योगिनि बांधे टोना आवहु सखि मिलि जादू कवनु कवनु देश कवनु फिर आदि अफूल फुलवाई ज्यों ज्योंआवै बास त्यों त्यों फलानी आवै हमरे पास कवहू देवीकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मोहनी ईश्वरोवाच ।

अन्यच्च ।

सोम शनिश्चर भौम अगारी । कहा चलति देई अंधारी । चारिजटा वज्रकेवार । दीनहि बांधो सोम-दुवार । उत्तर बांधो कोइला दानव दक्षिण बांधो क्षेत्र पाल चारि विद्या बांधिके देउ विशेष मवर भवर दि-धिलभवरगए चलु उत्तरापथ योगिनी चलु पातालसे बासुकी चलु राचन्द्रके पायक अंजनीके चीरलागे ईश्वर महादेव गौरा पार्वतीकी दुहाई जो टोना रहै एदी पिंड मन्त्र पढि फूकै टोना कइल न रहे ।

टोना झारेके प्रत्यक्ष करनेका मंत्र ।

लोहेके कोठिला वज्रके किवार । तेहिपर नावो बारम्बार । तेते नहिं पहनहिं एकहु बार । एक पंठा अनंडा बांधौ डीठि मूठि बांधौ तीरा बांधौ स्वर्गे इन्द्र बांधौ पाताले बासुकी नाग बांधौ सैयदके पांवशरण षोद की भक्ति नारसिंह वादिकार खेलु २ शंकिनी डं-किनी सात सेतरके संकरी बारह मनके पहार तेहि

ऊपर बैठु अब देवी चौतराकय आन जंभाइ जंभाइ गोरखकी दुहाई नोनाचमारीकी दुहाई तैंतीस कोटि वताओंकीदुहाई हनूमान्कीदुहाई काशी कोतवाल भैराकी दुहाई अपने गुरुहि कटारी मारु देवता खेल सभ आप लेइ काशीकादि कादिकाशीकर पाप तेहि देवताके कंध चढाइ काट जो मनमहँ क्षोभराखै ॥

मन्त्र स्त्रीझारेके टोना चुरैलके ।

एकांत परदा कराइके नोन पानीसे झारिये तौ टोनादिक न रहै उतरि जाइ तुरंत ।

ओं पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण चारिका सर्ग पाताल आंगनद्वार घर मझार खाट बिछौना गडई सोवनार सागलन औ जेवनार विरासोंधावै फुलेल लवंग सोपारीजे मुह तेल अवटन उवटन औ अवनहान पहिरणलहंगा सारी जानडोराचोलिया चादरि झीनमोट हूई ओढन झीन शंकर गौरा छेत्रपाला पहिले झारो वारम्वार काजर तिलक लिलार आंखि नाक कान

कपार मुह चोटी कण्ठ अवकंष कांध बाँह हाथ गोड़ अंगुरी नख धुकधुकी अस्थल नाभीपेटी नीचे जोनि चरणि कत भेटी पीठि करि दाव जांघ पेडुरी घूठी पावतर ऊषर अंगुरा चाम रक्त मांस डांड गुदी धातु जो नहींछाडु अंतरी कोठरी करेज पित्तही पित्तजिय प्राण सब बित बात अंकमने जागु बडे नरसिंह कि आनु कबहु न लागु फांस पित्तर रांग कांच लोहरूप सोन साच पाट पटवशन रोग जोग कारण दीशन डीठि मूठि टोना थापक नवनाथ चौरासी सिद्धके सराप डाइलि योगिनि चुरइनि भूतव्याधि परि अर जेजुतभनै गोरख वैन साच प्रगटरे विलाउकाली औ भैरवकी हांक फुरो ईश्वरोवाच ।

मंत्रज्वर झारेका ।

ओंनमो अजैपालकी दुहाई जो ज्वर रहै तौ महादेवकी दुहाई फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ।

इस मंत्रको सात७ बार पढकेझारे तौ ज्वर न रहे ॥

अन्यच्च ।

समुद्रस्योत्तरे कूले कुमुदो नाम वानरः ।
तस्य स्मरणमात्रेण ज्वरो याति दशो दिशम् ॥
इस मंत्रको पढ २ के कुशा से झारे तौ ज्वर न रहै ।

मंत्र तृज्वर झारेके ।

कारीकुक्करीसात पिल्ला व्याई सातौ दूध पिआई जिआई बाघ थन इलोकांश्चलाये के मंत्रेतीनो जाई मंत्र पढि पढि दाहिने हाथसे आंचर मीजत फूकै रोगीसे रोग छुवाइ ।

द्वितीय प्रयोग ।

ओं भगवति भग भाग दायिनी अमुकीं मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

इस मन्त्रसे गुरुवारको लवणको अभिमन्त्रित करके जिस स्त्रीको खानपानमें दे वह अवश्य वशमें होगी ।

द्वितीय मंत्र ।

ॐ ह्रीं महामातंगीश्वरी चांडालिनि अमुकीं पच पच दह दह मथ मथ स्वाहा ।

रविवारके दिन जिसका नाम लेकर दूध और शर्करासे होम करे वह वशमें होगी उपरोक्त दोनों मन्त्रोंका पुरश्चरण करते समय १०००० जप करनेसे सिद्धि होती है।

अन्य मंत्र।

ॐ कामिनी रंजिनी स्वाहा ।

अमुं मंत्रं अलक्तकेन स्त्रियाः करतले लिखेत् सा वश्या भवति ।

अन्य प्रयोग।

ॐ कुम्भनी स्वाहा ।

इस मन्त्रसे १०८ बार पुष्पको अभिमन्त्रित करके स्त्रीको सुंघानेसे वशमें होगी ।

द्वितीय मंत्र।

ॐ नमो नमः पिशानी रूप त्रिशूलं खड्गं हस्ते सिंहारूढे अमुका मे वशमागच्छ २ कुरु २ स्वाहा।

इस मंत्रको भोजपत्रके ऊपर लिखकर जिसका नाम लेके धूप दे वह वशमें होगा। परन्तु इस मंत्रको ७ अथवा २१ दिन सिद्ध करना चाहिये।

अन्यच्च।

ॐ ह्रीं सः।

इति मन्त्रेण मदनसदनांकुशध्वजं मेलयित्वा साध्यां वासाध्यां अयुतं १०००० जपे यथाभिलषितदिनेषु वश्यो भवति।

अन्य प्रयोग।

ह्रां अघोरे ह्रीं अघोरे हुं घोरघोरतरे सर्व सर्वे नमस्ते रूपे ह्रः ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे विच्चे नवाक्षरचंडीमंत्रेण निमन्त्रयेत्तच्च बलिपूर्वकम्।

अन्य मंत्रप्रयोग ।

ऐं भग भुगे भगनि भागोदरि भगमाले योनि भग-निपतिनि सर्वभगसंकरी भगरूपे नित्यक्लैं भगस्वरूपे सर्वभगानि मे वशमानय वरदेरेते सुरेते भगक्लिने क्लीं न द्रवे क्लेदय द्रावय अमोघेभगविघे क्षुभ क्षोभय सर्व सत्वाभगेश्वरि ऐं क्लुं जं ब्लूं भै ब्लूं मोब्लूं हे हे क्लिन्ने सर्वाणि भगानि तस्मै स्वाहा ।

जिस स्त्रीको वशमें करना होइ उसे देखता जाय और उक्त मन्त्रको जपै तौ शीघ्र वशमें होगी ।

दूसरा मंत्र ।

ॐ नमो उच्छिष्ट चाण्डालिनि पच २ भज २ मोहे २ मम अमुकीं वश्यं कुरु २ स्वाहा ।

भोजन करनेके अनन्तर पके हुए चावलोंको एक हाथमें लेकर इस मंत्रको पढे फिर उस भात-को रखछोडे । इसी प्रकार १० दिन पर्यंत करे फिर दसों दिनके भातको लेके ७ वार मंत्र पढकर स्त्रीको

खानेके लिये दे अथवा उसके घरमें फेंकदे तो वह वशमें होगी ।

परन्तु—नीचे लिखे यंत्रको अष्टगन्धसे भोजपत्र के ऊपर लिखकर पूजा करे प्रतिष्ठा करे और आसनके नीचे दाबकर फिर मन्त्र जपै ।

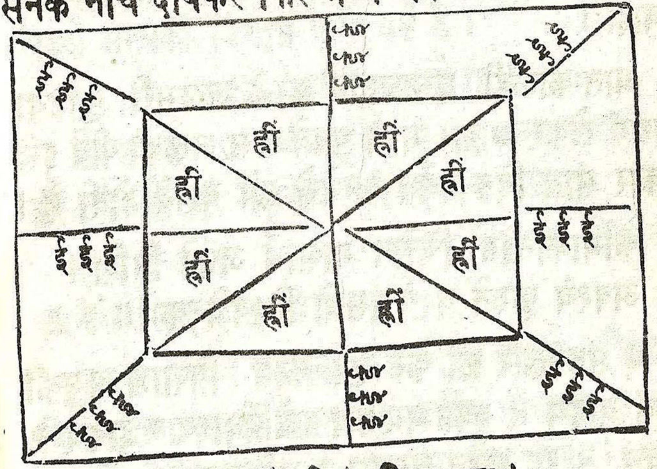

ॐ कामिनी रंजनि स्वाहा ।

अस्य मन्त्रस्यायुतं १०००० पुरश्चरणं कृत्वा

कामिनी हस्ते लिखेत् । सकृत् रविगुरुभौमवारे एवं वारत्रयं विलिखेत् तदा स्त्री वश्या भविष्यति ।

अथान्य प्रयोग ।

ॐ नमः क्षिप्रकामिनि अमुकीं मे वशमानय स्वाहा ।

प्रातःकालही दन्तधावन करके जलभरी लुटिया हाथमें लेकर ७ वार मन्त्र पढके उस जलको पीवै इस प्रकार सात दिन पर्यंत करनेसे स्त्री वशमें होती है ।

कामाक्रान्तेन चित्तेन मासार्धं जपते निशि ।
अवश्यं कुरुते वश्यं प्रसन्नो विश्वचेटकः ॥ १ ॥

ऐं सहवल्लरि क्लीं कर क्लीं काम पिशाच अमुकीं कामं ग्राहय २ स्वप्ने मम रूपे नखैर्विदारय २ द्रावय २ द्रावय २ रद महेन बन्धय २ श्रीं फट् ।

---

१ यदि नीचे लिखे दोनों मन्त्रोंको कामयुक्त चित्तसे १५दिन पर्यं जपै तो भगवान् महादेवकी कृपासे स्त्री अवश्य वशीभूत होगी ।

द्वितीय मन्त्र ।

ऐं सहवल्लरि क्लीं कर क्लीं काम पिशाचि अमुकीं कामग्राहय पद्मे मम रूपेण नखैर्विदारय द्रावय २ बन्धय २ श्रीं फट् ।

उपरोक्त दोनों मंत्रोंकी वोही विधि है जैसी इनसे पहले मन्त्रकी विधान करी गई है ।

अन्य मन्त्र प्रयोग ।

ॐ ठः ठः ठः ठः अमुकीं मे वशमानय स्वाहा ह्रीं क्लीं श्रीं श्रीं क्लीं स्वाहा । श्रीबटुकाय नमः ।

इस मन्त्रको १०००० जपे रविवारके दिन जप करनेसे सिद्ध होता है ।

इसके प्रयोग करनेकी यह विधि है कि-रविवारके दिन जौका आटा सवा पाव महीन पीसकर १ रोटी बनाके बेलै उसे मन्द २ आंचपर सेके । एकही तरफ सेकै दूसरी तरफ न सेकै एकही तरफसे ऐसी सेकै कि दोनों तरफ सिक जावे ॥ फिर जिधर सेकी

नहीं है उधर मन्त्र लिखै। सिंदूरको पानीमें घोलकर तर्जनी अंगुलीसे मन्त्र लिखना चाहिये। फिर उसकी पंचोपचार पूजा करे। मिष्टान्न दही और चीनी उस रोटीके ऊपर रखना यह सब वस्तु इस प्रकार रखनी जिसमें रोटी ढक जावै।

इस प्रकार करके जिसे वशमें करना हो उसका नाम ले २ कर उस मन्त्रका १०८ बार जप करै। इसके बाद मन्त्र पढ २ के उस रोटीके टुकडे कर २ के काले कुत्तेको खवावै। इस प्रकार करनेसे अवश्य वशमें होगी पूजनकी सामग्री यह है-गन्ध, पुष्प, सुपारी, पान, दीपक, गोरे बटुकनाथ और दक्षिणा इस मन्त्रका पुरश्चरण करते समय ब्रह्मचर्यसे रहना चाहिये।

आंखि झारेका मन्त्र।

पानीके छीटे पढिके मारे सातवेर कुलीमंडा जाई।

---

१ यदि स्त्रीको वशमें करना तो काली कुतियाको रोटी खवानी चाहिये।
२ यदि एक न खाय तौ दूसरे कुत्ते अथवा कुतियाको खवानी चाहिये।

सप्पांतिचसुकन्यांच च्यवनं शक्रमन्वितौ ।
एतेषां स्मरणान्नृणां नेत्ररोगो प्रणश्यति ॥

उठीझांखि झारेका मन्त्र ।

ॐ बने बिआई बानरी जहां २ हनिवन्त आंखि पीडा कपावरी गिहिया थनैलाइ चारिउजाइ भस्मत गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ।

आंखपर हाथ फेरे सात सात बार पढके फूंके तौ व्यथा और पीडा न रहै ।

रतौंधी झारेका मन्त्र ।

मंत्र पढि २ के फूके भाट भाटिनि सरिचली कहां जाइब जावेउ समुद्र पार भाटिनि कहा मैं बिआवेंऊ कुशकी छाली बिआवेंउ उपपमा छीकर मुडा अंडा घोसों हिलतारा सोहिल तारा राजा अजेपाल ऊतर तर है राजा अजैपाल करकंदार पानी भरत रहै उन्ह देखै पावावालाउ गोडिया मेला उजाल तैके मैं अघोखी ईश्वर महादेव कै दोहाई येही घरी उतरि जाइ ।

रस्सा झारेका मन्त्र ।

पानी ७ बेर पढके पियेके देई कारनी कर सो तुरंत छूटै । ॐ अगस्त्यः खनमानः खनित्रैः मयामयत्यंव लमीक्ष्यमाणः उभौवणावृष्टिरुग्रपुयोंषसत्तादेवेष्वाशिषो जगाम ॥ आतापि भक्षितो येन वातापि च महाबलः । समुद्रः शोषितो येन स मेऽगस्त्यः प्रसीदतु ॥ अगस्त्यं कुंभकर्णं च शनिं च वडवानलम् । आहार-परिपाकार्थं स्मरेच्च वृकोदरम् ॥

दांतव्यथा झारेका मन्त्र ।

पढिके फूके दरदपै बेर ७ व्यथा छूटै तुरंत । अग्नि बांधौ अग्निश्वर बांधौ सो खाल विकराल बांधौ सो लोहा लोहार बांधौ वज्रके निहाय वज्रघन दांत पिराय तो पिराय महादेवकै आन ।

नारा उखरा हो तो हाथ तर्जनी आंगुरिसे झारै ।

सम्पूर्ण शिरोव्यथाके मन्त्र ।

मालाकण्डाके बेर २१ तब फूके शिरोव्यथा

छूटै। निसु नहिरै रोइबदधर मेघ गरजहि निसुनहि कहलु धर कुफु निबेरी फुनि डमरू न बजै निसुनहि कहल विन्न पटु साचभई।

मन्त्र हूक झारेका।

ॐ सुमेरुपर्वत परनोनाचमारी सोनेकी रांपी सोनेका सुतारी हूक चूक वाह बिलारी धरणी नालि काटि कूटि समुद्र खारी वहावौ नोनाचमारीकी दुहाई फुरो मंत्र ईश्वरोवाच।

बार इक्कीस पढै शरीरहूक न रहै।

कर्णमूल मंत्र।

पढिके राखसे झारी कर्णमूल न रहै। वनाह गाठि बनरी तौ डाटे हनुमान् कंठा बिलारी बाघी थनैली कर्णमूल सभजाइरामचंद्रकीबचन पानीपथहोइ जाइ।

घीनहीका मंत्र।

एहर चालो मेहर चालो लंका छोडि बिभीषण चालो। बेगि चल बेगि चल मंत्रसहि।

मंत्र थनैली झारेका ।

कंप बिलारी बघ थनैला पांचवान माहि भैरों देल कंप बिलारी बघ थनैला डावा पलटि जाहु घर अपने राजा मनेरी की दुहाई जौडावार है गुरुकी दोहाई ।

ममरषी झारेका मंत्र ।

पढि २ के फूके । राजा अजैपाल सागर खतवारा वट बांधा घाट उतई ममरपी पानि पिउ सातराति मोहि पीपरपात गुंगी चौरी डोमिनी चंडालिनी तू है नीकी ममरषी तिल एक रथ ठाठि कण्ठ झारि ममरषी क्रोध करु ।

अंडवृद्धिका मंत्र ।

पढि पढि मले फूके अण्डवृद्धि छूटै ॐ नमो आदेश गुरुको जैसेकै लेहु रामचन्द्र कबूत ओसइ करहु राध बिनि कबूत पवनपूत हनुमंत धाउ हर हर रावन कूट मिरावन श्रवइ अण्ड खेतहि श्रवइ अण्ड अण्ड

विहण्ड खेतहि श्रवइ वाजगर्भहि श्रवइ स्त्री पीलहि श्रवइ शाप हर हर जंबीर हर जंबीर हर हर हर ।

यह मंत्र महा अनुभाव है चारि वस्तुपर चलता है जो स्त्रीको पानी पढके पिआवै तो गर्भ श्रवे महीना दुइ तीनका। पुरुषको पिआवै अंडवृद्धि छूटै नीका होय। एक ढेला पढिके सांपके बिपरीपर धरै तो सांप निकलि जाइ। तीनि ढेला पढिके तीनि कोन फेंकिदेइ तौ खेत सूखि जाइ उपजे नहीं। दिन तीनि चारिका बोवा होइ तिसपर चलै मंत्र पढके बार तीनिउ बार।

मृगीका मंत्र।

हाल हल सरगत मंडिका पुड़िआ श्रीराम फुकै मृगीवायु सूख ॐ ठः ठः स्वाहा।

यह मंत्रं लिखके कंठमें बांधे जब मृगी आवे।

खेत नीके उपजे और रक्षा रहै इसके मन्त्र

उलटथि नरसिंह पलटथि काया रक्षाकरथि नरसिंहराया ।

फूकाबागीका मन्त्र ।

वनेविआई अंजनि जायो सुत हनुवंत नेहरुवा-देहरुवा जरिहोइ भस्मंत गुरुकीशक्ति ।

मंत्र पढिवेर ७ सीकटी एक वा तीनि वा सात लेइ झारना फूकावाघी नीका होय ॥

अन्यच्च ।

भांमनसेति योगीभया जनेउतोरिनहेरु आकिया न पाकै न फूटे न व्यथाकरे विरूपाक्षकी आज्ञा भीत-रहि सरै ।

७ सात वेर पढि पानीका छीटा मारे नहेरुवा ओपिआइव पानी मंत्र पढे बार २१ नहेरुवा न रहै ।

पोतरहंडि व हूक और घेटमोर झारेका मन्त्र ।

मेघडंबर पोतरहड़ी तातीशरीर गरीगै जाती दोहाई अजैपालकै जोन जाय बांधि

मंत्र दादका ।

निकाहोय पानी परोरि पिआवो । ॐ गुरुभ्योनमः दंवदंव पूरीदिशा मेरुनाथ दलक्षनामरे विशाहतो राजा बैरीघनआज्ञा राजा बासुकीके आन हाथ बेगे चलाव ।

अन्यच्च ।

हाथ बेगे चलाइ अदिनाय पवनपूत हनिवन्त कर मोर कतमेरुचाल मंदिरचाल नवग्रहचाल दोष चाल पिनाइचाल डोरीचाल इन्द्रहिचाल चालरचाल हतन्तविनासहकाल उठि विषितरुवरचाल हम हनुमंते मुगरे लिंडापरोरौ वर्धछले तरूपरि धानपरिहियव अष्टोत्तरशतव्याधि लावरे विशालाब अहरोविशआह दादुवालेको पानी पिआइब ।

अन्यच्च

विषकै पावरि त्रिषकै मानि । विषै करिय भादिउ जानि । एकमजाइ दादुकरिअ असुकाअंगे कसकंडु दादु विनाइके छेद करि सिद्ध गुरूकी जावशरण ।

मंत्र रिसाके पानी परोरि पियाइ ।

ॐ ककराके नास्यकोन अन अगनित असुका के हर्ष नहोय रक्ता पीता श्वेता जावत जीवती हर्ष शत तावत प्रकाशं ब्रह्महत्याप्राप्नोति ब्रह्मणेनमः रुद्रायनमः अगस्त्याय नमः ।

कुकूर काटे तो झारेका मंत्र ।

कुम्हार चाकपरके माटी डङ्कपर फेरि फेरि झारेरोवां निकसैं नीका होय ।

कारी कुत्ती विविलारी धौना कुत्ता कलोर फलाना काटा कूकुरवारधयल्यायु ।

अन्यच्च ।

ॐ कुलकुस्वाहा पानी मंत्रिके देवचिरुवा सात ७ ।

मंत्र शींगी मछरिका ।

शींगी मौरी मेवताशी मारेमारे दुर्गादाशी जैथालषना ता पोखरा गौरा पैठि नहाहि महादेव पढि फूकहि विष निर्विष होई जाहि ।

मंत्र कठबेगुचीका ।

सोनेके सिंधोरा रूपे लागाबान छवमासके मुअलिमे गुचीला गसिन जिषघरुवरुआके कान घरुवरुआ मंत्र तुहहि जगावै नोता योगिनि श्रीपार्वती जागु जागु उपरवैशे होइत ।

मंत्र बीछी झारेका ।

सुरही कारीगाइ गाइकी चमरी पूछी तेकरे गोबरे बिछी बिआइ बीछी तोरे कइ जाति गौरावर्ण अठारह जाति छ कारी छ पीअरी छ भूमाधारी छरत पवारी छछ कुंहुं कुंहुं छारि उतरु बिछी हाड़ हाड़ पोर पोरते कस मारे लीलकंठ गरमोर महादेवको दुहाई गौरा

पार्वतीको दुहाई अनीत टेहरी शडार बन छाइ उतरहि बीछी हनुमंतकी आज्ञा दुहाई हनुमंतकी ।

अन्यच्च ।

परवत ऊपर सुरहीगाइ तेकरे गोबरे बीछी बिआइ छः कारी छः गोरी छः का जोता उतारिकै बिधा विछिठा वहिआ आठ गाठि नव पोर बीछी करे अजोर बलि चलु चलाइ करवाउ ईश्वर महादेवके दुहाई जहां गुरुके पांव सरके तहदि गुरूके कुश कजुरी तहहि त्रिष्णुपुरी निर्माजाइकै दुहाई महादेव गुरुके ठावहिं ठाव बीछी पार्वती ।

अन्यच्च ।

बीछी २ तोरे कै जाति छः कारी छः पीयरी छः परवारी वोधा पषाना पसस्वपाउ तोरी विषितइमें नाहि ठाउ ऊपरजा सिगुधे षाउ शिव वचन शिव नारि हनुमान्के आन महादेवके आनगौरापार्वतीके आन नोनाचमारिनिके आन उतरि आउउतरि आउ ।

अन्यच्च ।

अब हठ मुठिबैगनभाविउतरुबीछी मति करुवानि ।

अन्यच्च ।

जे सँदेश लेइ आवे तेहि पानी परोरि पिआइ देव । कायो षापे शिर मानिक रामुप मोड़ो मरिजासि अन षांधनो पानी पावै बांधि उतरि जासि ।

बीछूके विष चढानेका मंत्र ।

टूटे खाट पुराने बान चढ़जा बीछू शिरके तान ।

जहां बीछूने काटा हो उस स्थानसे इस मंत्रको फूंकै तौ विष बढजायगा ।

तत्रादौ सांप झारेका मंत्र ।

उत्तर दिशि कारी वादरि तेहिं मध्य ठाढ काल पुरुष एक हाथ चक्र एक हाथ गदा चक्र मारो शत खंड जाइ गदा मारे सातो पाताल जाइ ॐ हर हर निर्विष शिवाज्ञा ।

अन्यच्च।

थिरुपवन जेहि विष नाशे तेहि देखि विषधरहू कांपे सत्पर्जा आष विषमो संदीत्वैष्ठयै नहिं विषइ मेत्रे कुशलबालुगाले झावित्काल निर्विश होइ।

ज्वरबंधन झारेका मंत्र।

जटा ऊपर कारागरे ॐ नमः शिवाय शिवकी-आज्ञापुनः कागाचरे भीटे पनिनि आपरे पीठे सत्रा भार विष निजबडं अपने डीठे ॐ नमः शिव विआज्ञा।

लहरि जगानेके मंत्र।

छवमासकी परी डंकक्याकी करार गराने नतेरी मछिहि काग आवत कागा चरइ भीटे पानि आपरई पीठे सवाभार विष निजवडं अपने उडीठे ॐ नमः शिव विआज्ञा २ गिद्ध उड़इ ऊपर ईशर बाहन भय ठावहिषंव नोना परिहाथ षंडानके परिडंक उठि

ठाढि भइ जागु २ इश्वर डुहुरे डंकहाडं कंडाडिग
षंजरहू लागिकाइ देहांक देत आवै नोना योगि
डंक उठै बिहसाईते सात समुद्रे माझे षंडी कब्वी
ववाठे जीव धरवरो आमंत्रि रहहि जगावै नोना यो
गिनि पारवती जागु परमइ शतहुहुंरे डंक।

अन्यच्च।

वोह परोस रात सुनु २ काल डंक डंक मरै तौ
मारो सात गद सुरल पांजरराषु एकका काल महे
समंत्र यहां आप कह काटे तौ मनमह चुहुकीवे
थुकिडारीं आनके काटे तौ हाथसें ॐ चुहुक्कार अ
कार कनुविशनार षार छिछी विशनाहि आपुकह
काटे भा आनकह काटे तौ पढ़ि डंक पोछि देई।

शत्रुपादत्राणमारण मंत्र।

इम्नामीन् सलास मातिन्।

एक चिल्ल ४० दिनका रोज करै जप १०००
करके अमल करै। फूल, लोबान, सन्दल, चमेलीका

तेल, कस्तूरी, अरगजा दशांक अवर इन सबको बराबर लेके चूर्ण करले इनकी धूप चमेलीके तेलमें देना ४० दिनतक अमल करना इसके बाद खूबमजबूत मिट्टीका एक पुतला बनाके सुखावे उसे अगाडी धरकर शत्रुका ध्यान करके ऊपर लिखे मन्त्रका जप करे माला जियापोताके १०८ दानेकी जपना। एक जूता उस पुतलेके मारना इस प्रकार १०० माला जपके १०० जूते मारना और धूप देते जाना इस तरह सात दिनतक करनेसे शत्रुके जूते लगेंगे। अगर इस मंत्रको इसी प्रकार ४० दिनतक करै तौ शत्रुका कपाल भग्न होजायगा।

शत्रुके आवेश करनेका मंत्र।

जाग जागरे मसान मेरे सुरति करि २ फलानेका बेटा फलानेके घरजा जान जाय तौ तेरी मा बहिन की तीन तल्लाक।

इस मंत्रको सिद्धयोगमें १०८ बार जपके सिद्ध कर रक्खे कबरमें शूकरका एक दांत गाडदे। इस

मंत्रको २१ दिनतक कबरके पास खड़ा होके जपै
इस प्रकार रात्रीको जप करै तौ शत्रु घरसे निकले
और मुक्त करना होय तौ उस दांतको कबरमेंसे
निकाल ले ।

अनुभूत मंत्र ।

बार बांधो बार निकले जाकाट धारनी सूजाये
लय बहरना चौंहाथसे तौ काट दांतसे दुहाई
मामाहवाकी ।

पहले पोतनी मट्टीसे चौका लगावे । उसके ऊपर
सुपेद चादर बिछाके ऊपर बैठके जपे जपते वक्त
पश्चिमदिशाको मुख कर लेना चाहिये । एक घृतका
दीपक बालके सन्मुख धर लेना । एकपैसेका हलुआ
और एक पैसेकी पूरी । अतर मेवा गांजेकी चिलम
यह सब पदार्थ रक्खै, दो लौंगके जोडे धरना एक
नींबू यह सब दीपकके अगाडी रखके लोबानकी
धूप देना । इसके बाद संपूर्ण वस्तुओंको दरयावमें

फेंक देना। इसी प्रकार ४० दिनतक करना। परन्तु नींबू और दीपकको धरा रहने दे। फिर १०१ बार नींबूको अभिमंत्रित करके नींबूको छेदे इस प्रकार ४० दिन करनेसे शत्रुके उदरमें पीडा होगी और छेदन करनेसे मृत्यु होगी।

वशीकरण प्रयोग।

ॐ अस्य श्रीवामदेवमन्त्रस्य संमोहनऋषिः। गायत्री छन्दः। श्रीकामदेवदेवता अमुकवश्यार्थे जपे विनियोगः। अथ न्यासः—क्लां हृदयाय नमः। क्लीं शिरसे स्वाहा। क्लूं शिखायै वौषट्। कामदेवो देवो देवता अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्।

जपारुणं रक्तविभूषणाढ्यं मीनध्वजं चारुकृतांगरागम्। कराम्बुजैरंकुशमिक्षुचापं पुष्पास्त्रपाशौ दधतं नमामि। ॐ कामदेवाय सर्वजनप्रियाय सर्व जनसंमोहनाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल सर्वजनस्य हृदयं मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मंत्रको ५००० जपके सिद्ध करना चाहिये कनेरके लाल फूल और चमेलीका इत्र लगाके दशांश होम करे। बटुकके निमित्त कुमारको भोजन करावै ऊपर लिखे मन्त्रसे १०८ बार चंन्दनको अभिमंत्रित करके उस कुमारके तिलक लगावे। और जिसको वश करना हो उसका ध्यान करके बटुकसे संभाषण करे तो अवश्य वश होगा।

मारणप्रयोग।

ऐं ह्रूं ऐं श्रीं मम शत्रून् हानय हानय घातय घातय मारय मारय हुं फट् स्वाहा।

इस मंत्रके प्रयोग करनेकी यह विधि है कि रात्रीके समय शत्रुका ध्यान करके काष्ठकी मालाके ऊपर १००० जप करै इस प्रकार ४८ दिन तक करनेसे अवश्य शत्रुकी मृत्यु होगी।

यन्त्र ।

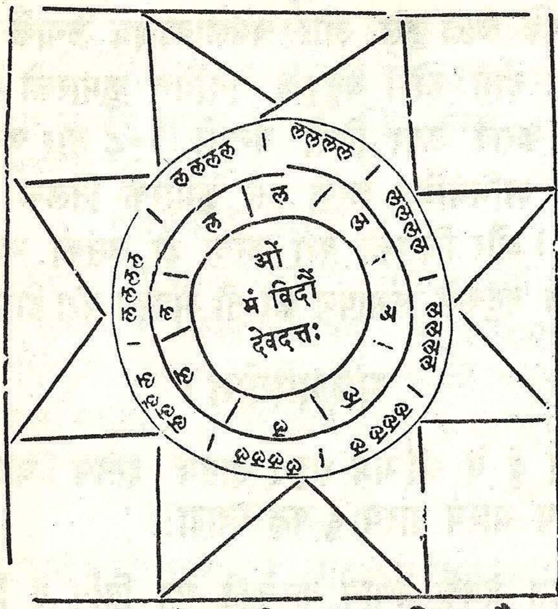

इस यंत्रको भोजपत्रके ऊपर हरिद्रा और हरतालसे लिखकर जिसका मारण करना हो उसका नाम लिखे और एकान्तमें स्थित करदे तौ शत्रुका नाश होगा ।

अथवा इस यंत्रकी पूजा करके यंत्रको एकान्तमें रखकर नीचे लिखे मंत्रको जपै तो शत्रुका मारण होगा।

मन्त्र।

भुंक्ष्व भुंक्ष्व अमुकं क्षं।

इस मंत्रको एकान्तमें यंत्रके निकट बैठके जपै और कड़वे तेलसे होम करै तो शत्रुकी मृत्यु होगी।

मंत्र वैरी पसावेका।

त्रिपुरा संदुरित जौतोहि तुजगे मानि जाउ पूत परारे बसिकरे वेरी रक्त नहाउ अलथांभौ थल थांभौ आपनिकाया खंड पृथिवी थांभौ त्रिपुरामाया थांभौ तिन्हमें त्रिपुरसुंदरीकी शरण जौं अमुकाके विष हरय परो वेगि देइ।

अथ बंधषलास मंत्र।

ॐ चक्रेश्वरी चक्रधारिणी शंख गदा प्रहारिणी अमुकस्य बंदी षलास। पढे बार २१ पढते बंदी छूटें।

अन्यच्च ।

ॐ गज गतेऽमकुरते दाम डंडस्त फेफेफेत्कार फारै विशिष ज्वाला माला करालं हो हो हो होनि हांतं हसि हसि मनिसभा सपाटा रहा सेहं कारणा नौदौस्ति रवन कुरुते सर्वतु मुखजंति । बार २१ ।

अन्यच्च ।

ॐ छोटि मोटि वेटुकी कानी कटुकइ इतासा एक विदुजइ मगीजइ सविंदु जाइ अमुकाका विवंधि पवंधि दोषो कामाक्षा देवी तेरी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र । बार २१ ।

अन्यच्च ।

ॐ नमोस्तु ते भगवते पार्श्वचन्द्राधरेन्द्र पद्मावती सहितायमेऽभीष्ट सिद्धिं दुष्टग्रह भस्म भक्ष्यं स्वाहा स्वमी प्रसादे कुरु कुरु स्वाहा हिलि हिलि मातंगनि स्वाहा स्वामी प्रसादे कुरु कुरु स्वाहा। २१ बंदी मोचनं भवति

अन्यच्च ।

वाघ वाहिनि सिंहेया काली काली कालाम्बी आजा देवी मैं तोरी शरणे वने नाही विशस तोहिदेवी त्रिभुवनरेमाष चौषष्टि बंधन काटार भांगी अपिला बाघ २ थापा एनी अलं चौषष्टि बंधन होइल वीरल काली कामा छोड़े हंकार चौषष्टि बंधनकाटार भागि मल छार थार कालिकार आज्ञा एतन्मत्र द्वयमष्टोत्तरशतं मह्यं नाना विधं बंध छेदो भवति । २१ इमं मंत्रं पठित्वा करांगुलिमात्रया प्रहारे दत्ते द्वारमुक्तो भवति । ॐ दं हं ॐ आये आये चिंविठि होलो वभनंदिका कालिका । अनेन मंत्रेण श्वेतसर्षपं श्वेतओठहुन पुष्पं पठित्वा प्रथम द्वारे क्षिपेत ततः सर्वद्वाराणि भंजति ।

अथ किंचित्सुप्रयोगः ।

चौरा बाधा सरपाउधाइ बन छाड़ि आबनन जाउ सावज धइ धइ ल्याउ रामचन्द्र मार लकु कुह्नावनके

षोषहि षाइ मोरि जहां जहां कपसरे मोरे झरले कठहि निर्विस होइजाइ दुहाई रामचंद्रके दुहाई गौरा पार्वतीके जो एही बन रह ।

मन्त्र बनझारेका ।

अर्ज्जुनः फाल्गुणो जिष्णुः किरीटी श्वेतवाहनः ।
बिभत्सुर्विजयः कृष्णः सव्यसाची धनंजयः ॥

इस मंत्रको लिखके पशुके गरे बांधे ऐतवारके अनुदये तौ खांग नीका होइ ।

मन्त्र किरहा झारका ।

चमारे बभनेकैल मिताई । ओकरेपापे पहरसाई सूर्य्य देवता साखी । जो अब रसाइरहे माखी ।

अन्यच्च ।

गङ्गापार बबुरके गाछी । झरे कीरा झरे रसाइ ईश्वर महादेव गौरा पार्वतीके दुहाई । अर्द्धोदय बेला सात गोटी पढि मारे न रहै ।

अथ गो महिष्यादि दुग्धवर्द्धनमंत्र ।

ॐ हुंकारिणी प्रसर शीतल । अनेन मन्त्रेण तृणान्यभिमन्त्र्य भोक्तुं दद्यात्पशुभ्यस्तदा बहुलं दुग्धं भवति ।

अथ स्त्रीणां गर्भधारणविधिः ।

वेदोक्तमंत्रः ।

विष्णुर्योनिंकल्पयतुत्वष्टारूपाणिपिंशतु आसिञ्चतु प्रजा पतिर्द्धाता गर्भं विदधातु गर्भं धेहिसिनीवाली गर्भंधेहि सरस्वती गर्भंते अश्विनौ देवा अधत्तांपुष्परस्रजौ । बांझ जो एक बार जाइ तौ गर्भ रहै पुत्र होई पै अपने पुरुषसे न लागै बीज जे बाहर आवैं सो कुक्षिहीके शिर डारे मंत्र कुतीका पढ़े बेर तीन वा सात वा इक्कीस ३ । ७ । २१ ।

अथ मंत्र साबर ।

ॐ नमो आदेश गुरुको ॐ नमो आदेश गुरुको बाझिन पुत्रिनि एक बांझ मराक्ष जाति चौथी

गर्भपातिनी चारि उन्हि एकमत भय चली चली कामरूगई कामरूदेश कामाक्षा रानीते इशमाइल योगी बषानी तुह जाहु योगिके पास पूरहि तो हरि मनके आस इसमालके संग उन्ह रतिकइ आंतर भेंटनो नावमा इनीसेभइ नोने कहा तहु चारिहु छिनारी कोषित निति कीन्हन देहगारी कोषिनिति कुंता पांच संगपेली एक द्रोपदी पांचके सहेली सूरज देवता साषी होहु मोरे जित्रमें भा संताप मोहिं तजिलागे परपुरुषकेपाप एकबुंद निति अकरम कीन्ह तेहिते है वंशकर चीन्ह शिववाचा ब्रह्मवाचा लेहुजमाउठोना टमाना भूत प्रेत दोष रोग जो लाख होइ तेहि जग चंडी जाउ हरिजंबीर ।

अथ गर्भरक्षाके मंत्र ।

पानी पढ़देइ बेर ७। ॐ पतहुभार्वयानारी स्थिर गर्भापिजायते । इति मंत्रेण जलं दद्यात् ।

अथ प्रसूतिका मंत्र ।

पानी पढ देना तुरंत बालक होइ । ॐ श्रावणो बंचगर्भा चसुखमेव प्रसूयते । इति मंत्रेण जलं देयम-सुखेन बालको जायते ।

गर्भ रक्षा गंडाबंधन मंत्र ।

गंडा कटि मह बांधव हिमवंत उत्तरे कुले कीद-शी नाम राक्षसी । तस्या स्मरणमात्रेण गर्भो भव-ति अक्षयः ॥ ॐ थाथो मोथो मेरा कहा कीजिये फलानीका गर्भ जाते राषि लीजिये गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ।

सर्वशूलके मंत्र ।

पानी पढि पिआइब । कालि कालि महा कालि न-मो स्तुते हनहन दहदह शूलं त्रिशूलेन हुँ फट् स्वाहा ।

अथ बालकरक्षा मंत्र बालकझारेका ।

उलदेव विहरतषे भगरज श्रीनरसिंह देवंये उरे-फलानाका भेउ ताहि षोडनारसिंह षं षं षं षं षं ।

अन्यच्च ।

आदि नाथ भय हरण कहहु कहवायो येही अब डर होयसे सावर हेत हवा वडिल भूत व्याधि डीठि मूठि सब बांधिके आनो ग्रह गाठकन सुरवायु साजि पङमनै बांध विज्ञत कै भैरव टोनहि लेइ आउ भैरवानन्द काशीका कोतवाल बनारसिकेषंभ बालुके कीजे हार तेहि लगि बात है ।

अन्यच्च ।

शुक्र शनिश्चर भौम अवारी कहवा चलेउ डाइनि मारी हंकिनी डंकीनि चढी पुरुव देशाकै वैसी पीपर-के डार सातसे योगिनी जागे मशान डीठि मूठि बांधिके आ नगरह गाडकन सुखाय संतावै मनैबाद विनती पर भैरव टोनहि लैआउ ।

अन्यच्च ।

षिललौराई षिललौलीन षिलौसोपतु सजांकाली मीडीठि अग्निपरोसे जेवे गरुड़ पाथरखाई भस्मत

भैजाई पत्थर शिलउ पत्थणि षिलावंरंङ षिलषिलं-
ग परबत हाथ चढा बशकरौं धौक लौहेको चनाचंडी
डीठि मूठि भस्मतहोइजाइ अपनी डीठि पर डीठि-
पर पीठि पाछे घालु बाटवीर हनिवन्त तेरी शक्ति-।

गंडा बालकरक्षाके विधि करब।

कुआरीन्याका काता सूत तेरह ताग कच्चा
घोंघा मह ओनइस १९ चाउर बासमतीके रांधिके
भात षिआईब सूतके गंडापुरि बांधि गरे

मंत्र घोंघारक्षक।

घोंघाघोंघा समुद्र घोंघासमुद्रके कितजानि
जानहु घोंघा जनि जरु सूत जरैंतो पारवती केश
आचर जरै तौ महादेवके जटा जरै।

मंत्र गंडापूरेका।

ॐ आसने योगी कपूत जंबीरके पास न वोई
अवरी गैकरीर कतमासुकी सानी बिआरी जेहिमे

१००० जप रात्रीमें करनेसे शत्रुके ऊपर शैतान चढैगा। १०८ नित्य जप करनेसे यह मंत्र सिद्ध रहता है। अगर शैतानको उतारना होय तौ गेहूकी रोटी बनाके एक तरफ घीसे चुपडै और एक गुडकी भेली उसके ऊपर धरकै दरियावमें बहादे तौ शैतान उतर जायगा।

मोहिनी यन्त्र।

इस यंत्रको भोजपत्रके ऊपर हरतालसे लिखै चाहे जिस कलमसे। उसका पूजन करे। फिर शत्रुके

नाम प्रतिष्ठा करै फिर कन्याके काते हुए सूत्रसे लपेटकर भूमिमें गाडदे तिसपर बैठके नित्य कुल्ला दतौनसे करै । तदनन्तर ७ लात मारै जबतक काम सिद्ध न हो तबतक ऐसाही करै ।

शत्रुज्वरयंत्र।

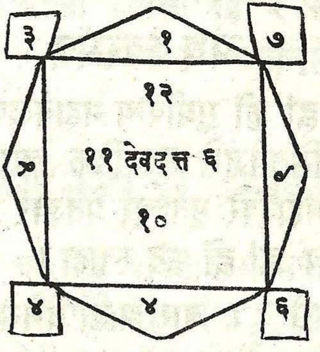

इस यंत्रको कोरे ठीकरेके ऊपर लिखके पुस्तके ऊपर शत्रुका नाम लिखे और अग्निमें डालदे तो शत्रु को ज्वर आवैगा । और जब अग्निमेंसे निकाला जायगा तब ज्वर उतर जायगा ।

चामुण्डामंत्रोद्धारः ।

चामुण्डे प्रथमे जपे च कथितं जृंभे तथा होमये
ज्ञातव्यं वशमानयेत्यपि पदं साध्यं च द्वीपायुतम् ।
स्वाहान्तः प्रणवादिरेष कथितस्तके ···· हनः
सन्मंत्रः कविसार्थसेवितपदो न स्याद्वितीयो भुवि ॥

चामुडामंत्रः ।

ॐ चामुण्डे जृंभे मोहये वशमानय स्वाहा ।

चामुंडाध्यानम् ।

दंष्ट्राकोटिविशंकटा सुवदना सान्द्रान्धकारे स्थिता
खट्वांगासितमूढदेच्छितकरा वामेशयासंशिरः ॥
श्यामा पिंगलमूर्धजा भयकरा शार्दुलचर्माम्बरा
चामुंडाशववाहिनी जपविधौ ध्येया सदा साधकैः ॥

करोड़ों डाढोंसे विकराल सुन्दर मुखवाली महा अँधेरेमें स्थित । ऐसी खाटपर बैठी । हाथमें तलवार लिये । काली और भूरे बालवाली । भय देनेवाली मृतकके ऊपर स्थित । ऐसी चामुण्डाका ध्यान करै

विधिः ।

जपता लक्षमसौ पलाशकुसुमैरग्रैर्दशांशे हुते सिद्धिं गच्छति वा सकर्मविधिना निः संशयं मंत्रजा । पुष्पंसप्तनिधानमंत्रणकृतं नूनं ददत्यादरात्तत्तद्रागवतींकरोतु वशगामित्याह वागीश्वरः ॥

इस मंत्रको एकलक्ष १००००० जपै । दशांश अर्थात् १०००० होम करै । होम पलाशके फूलोंसे करना चाहिये । होम करते समय एक २ पुष्पको सात २ बार अभिमंत्रित करके होम करना चाहिये जिसको वश करना होय उसका ध्यान करै अवश्य सिद्धि होगी ।

कामेश्वरमन्त्रोद्धारः ।

आदौ कामपदं ततो निगदितं संबोधने देवहि प्रोक्तं कर्मपदान्वितं मृगदृशां नाम स्फुटं निर्दिशेत् । तस्मादानयतां ततो मम पदं ज्ञेयं पदं चेत्यतोऽप्योंकारान्वितह्रीमिति प्रकटितो मन्त्रो मया मन्मथः ॥

कामेश्वरमंत्रः ।

कामदेवासुकीमानय मम पदं वशं च ।

अथ ध्यानम् ।

आकर्णाञ्चितकामुर्को हरपदे धुन्वन् हरं सायकै-
र्भानोर्मण्डलमध्यगो दयितया सानन्दमालिंगितः ।
प्रत्यालीढपदो जपानिभतनुर्भग्नः परेतासनः कन्दर्पो
जयकर्मणि प्रतिदिनं ध्येयो नरैरीदृशः ॥

कर्णताईं जिसने धनुष खैंच रक्खा है । और महादेवके ऊपर अपने बाणोंका प्रहार करनेवाला । सूर्यके मण्डलमें विराजमान और रति नामकी जो कामदेवकी स्त्री तिसकरके आलिंगन करा हुआ और जपाके पुष्पके समान जिसका देह है । और मृतकोंके आसनवाला ऐसे कामदेवका जयकाममें ध्यान करना ।

अथ विधिः ।

जप्त्वा भावयुतं कदंबकुसुमं पुष्पं पलाशस्य वा हुत्वा पंचसहस्रमेति नियतं सर्वः मनोवांछितम् । ताम्बूलं कुसुमं सुगन्धमथवा वस्त्रं प्रदत्त्वाथवा सप्तावर्तितमेव सिद्धिसहिता कामं जगन्मोहयेत् ॥

ऊपर लिखे मंत्रको शुद्धभावसे ५००० जपै । और दशांश ५०० होम करै । होम पलासके फूलोंसे तथा कदम्बके फूलोंसे होम करै तो सिद्धि होती है । और यदि पान या फूल अथवा और कुछ सुगन्धित वस्तु इनका होम करे और इस प्रकार ७ बार करै तौ संसारभी वशमें अवश्य होगा ।

स्थाननिर्णयः ।

शम्भोरायतने चतुष्पथतटे नद्यां स्मशाने गिरौ मध्ये मन्त्रवरः करोति विशगामष्टौ महासिद्धयः ॥

वश्या कर्षणमोहममन्मथमनः स्तम्भादयो हस्तगाः।
प्रायःप्राकृतसिद्धयश्च वशगाः प्राप्याः कवित्वादयः॥

महादेवके मठ। अथवा चौराहेके बीच अथवा नदीके किनारे। अथवा स्मशानके विषैं। इनमेंसे किसी एक स्थानमें बैठकर जप करनेसे-सब काम सिद्धि होय। वशीकरण होता है, आकर्षण होता है तथा मोहनभी होता है। विशेष क्या कहैं यदि भली, प्रकार सिद्धि किया जाय तो इस मंत्रसे वाक्सिद्धि-तक हो जाती है।

वशीकरणप्रयोग।

नीचे लिखे यंत्रको भोजपत्रपर गोरोचनसे लिखे पूजन करे पुष्प चढावे और फिर शहतमें धर दोगे तो शत्रु वशीभूत होगा।

यन्त्र ।

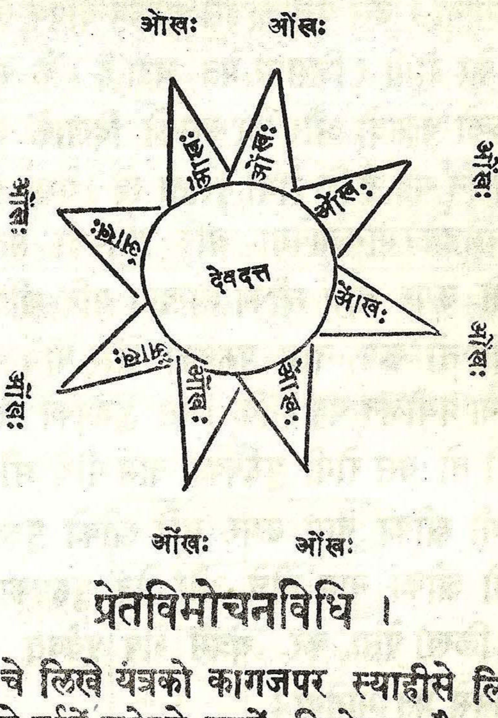

प्रेतविमोचनविधि ।

नीचे लिखे यंत्रको कागजपर स्याहीसे लिखन
फेर उसे रूईमें लपेटके घृतमें भिगोकर चौका (ज

मीन लीपना) देकर (चौका एक बलिस्त भर जगह-में लगाना) उस बत्तीका इस चौकेमें दीपक जलाना और फेर रोगी (जिसपर प्रेत चढा है) के सन्मुख दीपकको बुझदो और फेर उसको दिखाके बालदो (प्रयोजन यह है कि रोगी देखता रहे) ऐसा करनेसे प्रेत छोडकरभागजावेगा यदि पुरुषको प्रेत चढा हो तो ऊपर नाम स्त्रीका लिखना यदि स्त्रीको प्रेत चढाहो तो ऊपर नाम पुरुषका और नीचे स्त्रीका लिखना प्रयोजन यह है कि जिस पुरुषको जो प्रेत स्त्री हो तो उस रोगी पुरुषका नाम नीचे और प्रेत-रूपिणी स्त्रीका नाम ऊपर यदि स्त्रीको पुरुष प्रेत हो तो स्त्रीका नाम नीचे और प्रेत पुरुषका नाम ऊपर लिखो ऐसा कर यंत्रमें शेष पूर्ववत् करके दिखानेसे प्रेत भागेगा।

प्रेतविमोचनबुदुनवत।

य:वुदु:	य:वुदु:	य:वुदु:	य:वुदु:	य:वुदु:	य:वुदु:	य:वुदु:
य:वुदु:	य:वुदु:	य:वुदु:	य:वुदु:	य:वुदु:	य:वुदु:	य:वुदु:
य:वुदु:	य:वुदु:	य:वुदु:	य:वुदु:	य:वुदु:	य:वुदु:	य:वुदु:
य:वुदु:	य:वुदु:	य:वुदु:	य:वुदु:	य:वुदु:	य:वुदु:	य:वुदु:
य:वुदु:	य:वुदु:	य:वुदु:	य:वुदु:	य:वुदु:	य:वुदु:	य:वुदु:
य:वुदु:	य:वुदु:	य:वुदु:	य:वुदु:	य:वुदु:	य:वुदु:	य:वुदु:
य:वुदु:	य:वुदु:	य:वुदु:	य:वुदु:	य:वुदु:	य:वुदु:	य:वुदु:

इस यंत्रको जुमेके दिन यदि गलेमें बांधे तो फिर मुकद्दमामें जीत होती है अर्थात् अपराधी छूटता है परंतु नीचे उसका और उसकी माताका नाम लिखे।

यंत्र।

२४	३३८	३३३	या हाफीज
३३८	३३२	३३३	या हाफीज
३३५	३३७	३३७	९९
या हाफीज	या हफीज	९९	॥